Artistic Narration Vol. XVI No. 1 Jan.-June 2025 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247 Impact Factor 8.898 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.010

बिहार क्षेत्र की टिकुली कला का उल्लेख

गीतांजली गालव
शोधकर्ता
चित्रकला विभाग,
दयालबाग एजुकेशन इंस्टीट्यूट, आगरा
ईमेलः*geetanjali.galav@gmail.com*

प्रो0 मीनाक्षी ठाकुर
पर्यवेक्षक, एसोसिएट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग
दयालबाग एजुकेशन इंस्टीट्यूट,
आगरा

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 10.04.2025
Approved: 20.05.2025

गीतांजली गालव
प्रो0 मीनाक्षी ठाकुर

बिहार क्षेत्र की टिकुली कला का उल्लेख

Artistic Narration 2025,
Vol. XVI, No. 1,
Article No.10 pp. 071-076

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-june-2025-vol-xvi-no1
Referred by:
DOI:*https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.010*

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र के अन्तर्गत बिहार की लोक कला संस्कृति एवं साहित्य पर चर्चा की गई है। जिसके अन्तर्गत लोक कला के रूप में विश्व भर में अपनी पहचान बनाने वाली 'टिकुली कला' के उद्भव व विकास पर पूर्ण प्रकाश डालते हुये कला की इस उद्भुद शैली पर विस्तृत चर्चा की गई हैं। टिकुली कला का उद्भव बिंदी के रूप में माना जाता है और समय के अनुरूप इसके रूप में परिवर्तन होने से आज यह कला M-D-F- बोर्ड पर बनाई जाने लगी है।

समीक्षाओं, साक्षात्कार, व्यक्तिगत पत्राचार के माध्यम से जानकारी एकत्रित करते हुये, यह अध्ययन दर्शाता है कि कला के किसी रूप को जीवांत रखने हेतु अत्यधिक परिक्रम व नित नये परिवर्तनों की आवश्यकता होती हैं। पूर्णतः लुप्तता की कगार पर पहुंच चुकि यह 'टिकुली कला' आज कुछ परिश्रमी कलाकारों के माध्यम से लोगों के घरों तक पहुँचने का प्रयास कर रही हैं। कला के इस स्वरुप को जनजीवन तक पहुंचने हेतु व्यक्तियों की आवश्यकतानुरूप वस्तुओं में ढाला जा रहा है, जिससे इस कला को मृतप्रायः होने से बचाया जा सकें।

मुख्य बिन्दु

लोक कला, शिल्पकला, बिहार, टिकुली कला, बिंदी, मृतप्रायः।

गीताजंली गालव, प्रो0 मीनाक्षी ठाकुर

टिकुली कला बिहार की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का एक अद्भुत उदाहरण है, जिसमें परंपरा, इतिहास, और शिल्प कौशल का अद्वितीय संगम देखने को मिलता है। यह कला न केवल बिहार की पहचान है, बल्कि भारतीय संस्कृति के शिल्पकला–वैभव में भी अपना विषेश स्थान रखती है।

टिकुली शब्द का अर्थ और पृष्ठभूमि- 'टिकुली' शब्द का संबंध भारतीय परंपरा में महिलाओं द्वारा माथे पर लगाई जाने वाली बिंदी से है। बिंदी या टिकुली एक गोलाकार आभूषण होती है, जिसे मस्तक पर, दोनों भौंहों के बीच लगाया जाता है। इसे **'अजना चक्र' (छिपे हुए ज्ञान का केंद्र)** का प्रतीक माना जाता है। बिंदी को प्राचीन काल में आध्यात्मिक और मानसिक एकाग्रता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से लगाया जाता था। भारतीय संस्कृति में यह **'तीसरी आंख'** का प्रतीक भी मानी जाती है।

टिकुली कला का उद्भव- टिकुली का इतिहास मौर्य और गुप्त काल (लगभग 2500 वर्ष पूर्व) तक माना जाता है। मौर्य काल में पाटलिपुत्र की राजघराने की महिलाएं इसे अपने चेहरे को सजाने के लिए उपयोग करती थीं। चीनी यात्री फाह्यान ने अपनी पुस्तक में टिकुली पहनने की इस परंपरा का उल्लेख किया है। लगभग 800 वर्ष पूर्व, टिकुली से प्रेरित होकर पटना शहर में एक शिल्पकला का उदय हुआ, जिसे 'टिकुली कला' का नाम दिया गया। प्रारंभ में यह कला कांच के छोटे–छोटे टुकड़ों पर सोने की परत चढ़ाकर बनाई जाती थी। पटना में यह कला सैकड़ों वर्षों तक कुटीर उद्योग के रूप में फली–फूली। प्राचीन काल में यह कला 500 परिवारों के 5000 व्यक्तियों के लिए रोजगार का प्रमुख साधन थी। हिंदू और मुस्लिम समुदाय इस कला को मिलकर प्रोत्साहित करते थे।

टिकुली कला की विशेषताएं-

1. लोककला और धार्मिकता का समावेश- टिकुली कला में बिहार की लोक संस्कृति, धार्मिक कथाएं और पारंपरिक रीति–रिवाज चित्रित होते हैं। रामायण, महाभारत, कृष्ण लीला, और बिहार की ग्रामीण जीवन शैली इसके मुख्य विशय हैं। मधुबनी कला से प्रेरित दृश्यांकन भी इसमें देखने को मिलते हैं।

2. मटेरियल और तकनीक- प्रारंभ में टिकुली कांच के टुकड़ों पर सोने की परत चढ़ाकर बनाई जाती थी। वर्तमान में हार्डबोर्ड और एमडीएफ (MDF) का उपयोग किया जाता है। एनामेल पेंट और 000 साइज के ब्रश से चित्रकारी की जाती है।

3. डिजाइन का विकास- टिकुली कला ने समय के साथ परंपरागत बिंदी से लेकर वॉल हैंगिंग, टेबल डेकोरेटिव्स, और अन्य सजावटी वस्तुओं का स्वरूप धारण कर लिया है।

टिकुली निर्माण प्रक्रिया का विस्तृत विवरण- टिकुली कला, बिहार की प्राचीन और समृद्ध हस्तकला, अपने निर्माण में जटिल और अद्वितीय प्रक्रिया का अनुसरण करती थी। यह कला हिन्दू और मुस्लिम कारीगरों के बीच सामाजिक समरसता का प्रतीक थी, जहां दोनों समुदाय मिलकर टिकुली का निर्माण करते थे।

प्राचीन निर्माण प्रक्रियाः

1. कांच को पिघलाना और आकार देना- सबसे पहले कांच को ऊंचे तापमान पर पिघलाया जाता था। पिघले हुए कांच को गुब्बारे की तरह फुलाया जाता था। इस फुलाए हुए कांच को विशेष कैंची की सहायता से सिक्के के आकार में गोल–गोल काटा जाता था।

2. सोने की परत चढ़ाना- कांच के इन गोल टुकड़ों पर गोल्ड फ्वाइल चिपकाई जाती थी।

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.010

3. डिजाइन उकेरना- गोल्ड फ्वाइल पर बांस की कमानी से बनी नुकीली कलम का उपयोग कर डिजाइन बनाई जाती थी। इस प्रक्रिया में कलम द्वारा खुरचने से सोने की परत के कुछ हिस्से हट जाते थे, और खाली जगह में सुंदर आकृतियां उभरकर आती थीं।

4. कार्य विभाजन- एक कारीगर कांच को फुलाने और आकार देने का काम करता था। दूसरा कारीगर सोने की परत चढ़ाने का कार्य करता था। तीसरा कारीगर डिजाइन बनाकर उसमें रंग भरता था।

5. समय और मेहनत- पूरी प्रक्रिया में एक टिकुली बनाने में 7 से 10 दिन का समय लगता था।

आधुनिक टिकुली निर्माण प्रक्रिया- वक्त के साथ टिकुली का स्वरूप और निर्माण सामग्री बदल गए। आज टिकुली बनाने में कांच की जगह हार्डबोर्ड और एमडीएफ बोर्ड का उपयोग होता है।

1. बेस तैयार करना- हार्डबोर्ड या एमडीएफ बोर्ड को गोल आयताकार या चौकोर आकार में काटा जाता है। सतह को एनामेल पेंट से कोट किया जाता है। चिकनाई और चमक लाने के लिए सैंड पेपर से रगड़ा जाता है।

2. डिजाइन बनाना- 000 साइज के ब्रश का उपयोग कर पारंपरिक या आधुनिक डिजाइन उकेरे जाते हैं। मधुबनी कला, रामायण, महाभारत, राधा–कृष्ण, प्रकृति, और नृत्य के विशयों से प्रेरित चित्रण किए जाते हैं।

3. उपयोग- पहले टिकुली माथे पर पहनने के लिए बनाई जाती थी। अब यह वॉल हैंगिंग, डेकोरेटिव प्लेट्स, और अन्य सजावटी वस्तुओं में परिवर्तित हो चुकी है।

टिकुली कला का संक्षिप्त इतिहास और विकास- टिकुली कला, जो अपने आरंभिक दौर में सोने की सतह पर बनाई जाती थी, मुगल काल में अपने चरम पर थी। यह कला उस समय न केवल सौंदर्य का प्रतीक थी बल्कि एक समृद्ध उद्योग भी थी। 20वीं सदी में ब्रिटिश औद्योगिक उत्पादों के आगमन ने इस कला को एक बड़ा झटका दिया। मशीनीकृत बिंदी की सस्ती और व्यापक उपलब्धता के कारण टिकुली कला की मांग घट गई।

टिकुली का प्रारम्भिक स्वरूप

प्रथम बदलावः कांच का प्रयोग- इस कला को बचाने के प्रयास में पटना के कारीगरों ने छोटे कांच की जगह बड़े कांच का उपयोग शुरू किया। टिकुली बनाने की तकनीक समान रही, लेकिन स्वरूप में बदलाव आया।

द्वितीय बदलावः एनामेल पेंट का उपयोग- 1960 के दशक में गोल्ड फॉयल बाजार से गायब हो गई। इस चुनौती का समाधान टिकुली कलाकारों ने एनामेल पेंट के प्रयोग से किया। कांच पर गोल्ड फॉयल के स्थान पर एनामेल पेंट से टिकुली बनाई जाने लगी।

टिकुली कला का प्राथमिक स्वरूप

टिकुली कला का द्वितीय चरण, एनामेल पेंट द्वारा

तृतीय बदलावः लकड़ी और हार्डबोर्ड का उपयोग- एक प्रसिद्ध कलाकार उपेंद्र महारथी ने टिकुली कला को पुनर्जीवित करने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने लाल बाबू गुप्ता जैसे कारीगरों के साथ मिलकर इसे नई दिशा दी। जापान दौरे से प्रेरित होकर उन्होंने कांच की जगह लकड़ी का उपयोग सुझाया। इसके बाद, लकड़ी, हार्डबोर्ड, और फिर एमडीएफ (मीडियम डेंसिटी फाइबर) बोर्ड टिकुली कला के आधार बन गए।

आधुनिक टिकुली कला- परंपरा और नवाचार का संगम

टिकुली कला, जो कभी केवल पारंपरिक बिंदी के रूप में सीमित थी, आज अपने आधुनिक स्वरूप में सजीव और समृद्ध है। समय के साथ यह कला न केवल अपनी ऐतिहासिक जड़ों को सहेजने में सफल रही है, बल्कि आधुनिक सामग्रियों और रचनात्मक प्रयोगों के साथ खुद को नया आकार भी दिया है।

आधुनिक टिकुली कला में उपयोग की जाने वाली सामग्री और तकनीक

1. एमडीएफ बोर्ड और एनामेल पेंट- टिकुली कला अब एमडीएफ बोर्ड (मीडियम डेंसिटी फाइबर बोर्ड) पर की जाती है। एनामेल पेंट का उपयोग इसे टिकाऊ, हीटप्रूफ, और वाटरप्रूफ बनाता है। सैंड पेपर से सतह को चिकना और चमकदार बनाया जाता है, जिससे पेंट और डिजाइन अधिक प्रभावशाली दिखें।

2. विशेष ब्रश का उपयोग- 000 साइज के बारीक ब्रश का उपयोग होता है, जो कलाकृतियों को अद्वितीय सटीकता और सुंदरता प्रदान करता है। पहले यह ब्रश गिलहरी या सेबल के बालों से बनते थे, लेकिन अब सिंथेटिक ब्रश का चलन बढ़ा है।

3. पृष्ठभूमि का पारंपरिक रंग- टिकुली कला में पृष्ठभूमि आमतौर पर भूरे रंग की होती है। यह रंग डिजाइनों को उभारने में मदद करता है और कलाकृति को गहराई प्रदान करता है।

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.010

उत्पाद और उनकी उपयोगिता- आधुनिक टिकुली कला ने पारंपरिक डिजाइनों को दैनिक उपयोग की वस्तुओं में परिवर्तित करके इसे व्यापक पहुंच दिलाई है।

- सजावटी और उपयोगी वस्तुएं- टेबल मैट, कोस्टर, ट्रे, पेन स्टैंड, फ्लावर वास, कार्ड होल्डर, पेंसिल बॉक्स, वॉल हैंगिंग और ज्वेलरी बॉक्स।
- सजावटी दीवार प्लेट- इन पर पारंपरिक कथाएं और जीवन के दृश्य बनाए जाते हैं।

कला का आर्थिक और सामाजिक प्रभाव-

- रोजगार और आर्थिक विकास- टिकुली कला ने कई कलाकारों को आजीविका प्रदान की है। आधुनिक डिजाइनों और उपयोगिता से इसके उत्पादों का आर्थिक मूल्य बढ़ा है।
- नवाचार का दायरा- परंपरागत धार्मिक कथाओं के साथ–साथ इसमें आम जनजीवन और सांस्कृतिक विविधता को भी शामिल किया गया है।

टिकुली कला ने माथे पर लगने वाली बिंदी से लेकर घरों एवं आर्ट गैलरी में टंगने वाली कला तक, एक लंबा सफर तय किया है। वर्तमान में एक कलानुरागी और टिकुली कलाकार अशोक कुमार बिस्वास की मेहनत की बदौलत ही आज यह कला फल–फूल रही है। इस हेतु टिकुली कला के अस्तित्व को आज के परिवेश में बचाए रखने की खातिर ग्रामीण महिलाओं को इस पहल से जोडा गया जिसमें महिलाएं जीविकोपार्जन हेतु धन भी कमा सकें एवं टिकुली कला का प्रचार भी हो सके। यदि बिहार की ग्रामीण कला की बात की जाए तो सर्वप्रथम मधुबनी का नाम प्रथम स्थान पर लिया जाता है, यही कारण है कि टिकुली कला को कभी पर्याप्त संरक्षण प्राप्त ही नहीं हुआ इसी कारण एक समय बाद यह विलुप्तता की कगार पर पहुंच गई किंतु लोक कलाकारों के प्रयास स्वरूप ही टिकुली कला आज फिर से फल–फूल रही है एवं बिहार ही नहीं अपितु संपूर्ण भारत में इसे पहचान दिलाने हेतु कई कलाकार प्रयासरत है। वर्ष 2005 में भारत के प्रधानमंत्री द्वारा भारत में व्याप्त बेरोजगारी को खत्म करने एवं युवाओं को विभिन्न कार्यों में उनके कौशल के अनुरुप सक्षम बना कर देश में रोजगार लाने हेतु 'प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना' भी लागू की गई है। सन् 2024 में **अशोक कुमार विश्वास** को टिकुली कला को पुनर्जीवित कर इस कला के संरक्षण हेतु अपने अतुलनीय योगदान के कारण **पद्मश्री** से नवाजा गया। उनकी यह उपलब्धि उन कलाकारों और हस्तशिल्पकारों के लिए प्रेरणा है जो पारंपरिक कलाओं को जीवित रखने और उन्हें बढ़ावा देने में जुटे हैं। टकुली कला एक

अद्भुत और प्राचीन कला रूप, ने अपनी लुप्त होती पहचान को पुनर्जीवित किया है। 1982 में एशियाई खेलों के दौरान इस कला को एक बड़ा मंच मिला, जब सभी एथलीटों को इसे उपहार में दिया गया।

हालांकि 1984 में भारत सरकार ने कलाकारों से सीधी खरीदारी बंद कर दी, जिससे टिकुली कलाकारों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। वे अपने काम को बाजार में लाने में असमर्थ रहे और कई को दूसरी नौकरियों की तलाष करनी पड़ी। फिर, 1996 में अशोक कुमार बिस्वास ने दिल्ली हाट में प्रदर्शनी आयोजित की, जिसने टिकुली कला को नई जान दी। अब, इस कला में मुख्य रूप से महिलाएँ शामिल हैं, जो इसे भारत की महिला–केंद्रित पारंपरिक कला के रूप में स्थापित कर रही हैं। टिकुली कला आज भी जीवंत है, और इसकी सुंदरता और समृद्धि को बनाए रखने के लिए प्रयास जारी हैं। टिकुली कला प्राचीन बिहार की विरासत का जीवंत उदाहरण है, जिसने समय के साथ बदलती तकनीकों और सामग्रियों को अपनाकर अपनी प्रासंगिकता बनाए रखी है। यह कला आज भी अपने पारंपरिक और आधुनिक स्वरूप में कला प्रेमियों के बीच लोकप्रिय है। यह शोध–पत्र टिकुली कला की खोई हुई गरिमा को पुनः स्थापित करने और इसे ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण और सामाजिक–आर्थिक विकास के साधन के रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। यह न केवल इस कला को बचाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा, बल्कि इसे नई पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा भी प्रदान करेगा।

सन्दर्भ

1. Upendra Maharathi Shilp Anusandhan Sansthan. *Design and Technology Development Workshop for Tikuli Art at Tikuli Cluster, Danapur, 16 July – 20 August 2018*. Sponsored by Office of Development Commissioner (Handicraft), Ministry of Textiles, Govt. of India, New Delhi. *UMSAS*, https://umsas.org.in/ova_doc/design-report-on-tikuli-craft-patna-cluster/
2. Fashion Communication Department, National Institute of Fashion Technology. Tikuli Art: Sona Art - Patna. Mitha Farms, Patna, Bihar, 800001. Issuu, https://issuu.com/randheerkumarrd/docs/craft_promotion_final.
3. Bhartia, Swati. *Design Awareness Programme Report: Tikuli Cluster, Digha, Distt- Patna (Bihar), India*. Submitted for DCS, MSMEs Scheme 2014.
4. Kamra, Surbhi. "Tikuli Art Unveiled: Stories Behind Tikuli Art." *Craft Masala by iTokri*, iTokri, 30 Jan. 2024, https://itokri.com/blogs/craft-masala-by-itokri/tikuli-art-unveiled-stories-behind-tikuli-art.